कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती - सोहनलाल द्विवेदी

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।
आख़िर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है,
जा जा कर खाली हाथ लौटकर आता है।
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में।
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों कभी की हार नहीं होती।

असफलता एक चुनौती है स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई देखो और सुधार करो,
जब तक न सफल हो नींद चैन की त्यागो तुम,
संघर्षों का मैदान छोड़ मत भागो तुम,
कुछ किए बिना ही जयजयकार नहीं होती,
कोशिश करनें वालों की कभी हार नहीं होती।

तुलसी के दोहे - भावार्थ (३ अंक)

१. मुखिया मुखु सो चाहिए, खान पान को एक |
पालै पोसै सकल अंग, तुलसी सहित बिबेक ||
भावार्थ- तुलसीदास जी कहते हैं कि मुखिया मुख के समान होना चाहिए जो खाने-पीने को तो अकेला है, लेकिन विवेकपूर्वक सब अंगों का पालन-पोषण करता है |

२. जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार॥.
भावार्थ-विधाता ने इस जड़-चेतन विश्व को गुण-दोषमय रचा है, किन्तु संत रूपी हंस दोष रूपी जल को छोड़कर गुण रूपी दूध को ही ग्रहण करते हैं। उसी तरह सभी सन्मार्ग को अपनाए।

३. दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान |
तुलसी दया न छांड़िए ,जब लग घट में प्राण ||
भावार्थ: गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं कि मनुष्य को दया कभी नहीं छोड़नी चाहिए क्योंकि दया ही धर्म का मूल है और इसके विपरीत अहंकार समस्त पापों की जड़ होता है|

४.तुलसी साथी विपत्ति के, विद्या विनय विवेक|
साहस सुकृति सुसत्यव्रत, राम भरोसे एक||
भावार्थ: तुलसीदास जी कहते हैं, किसी विपत्ति यानि किसी बड़ी परेशानी के समय आपको ये सात गुण बचायेंगे: आपका ज्ञान या शिक्षा, आपकी विनम्रता, आपकी बुद्धि, आपके भीतर का साहस, आपके अच्छे कर्म, सच बोलने की आदत और ईश्वर में विश्वास|

५. राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरीं द्वार |
तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौं चाहसि उजिआर ||
भावार्थ: तुलसीदासजी कहते हैं कि हे मनुष्य ,यदि तुम भीतर और बाहर दोनों ओर उजाला चाहते हो तो मुखरूपी द्वार की जीभरुपी देहलीज़ पर राम-नामरूपी मणिदीप को रखो |

• तीन अंकोवाले प्रश्न -

1. भारत माँ के प्रकृति-सौंदर्य का वर्णन कीजिए ।
कवि भगवती चरण वर्मा जी भारत माँ के प्रकृति-सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं, भारत में हरे-भरे खेत सुंदर हैं। फल-फूलों से भरा वन-उपवन हैं। भारत के भूमि के अंदर खनिजों का व्यापक धन है। मुक्त हस्त से भारत माँ सभी को सुख-संपत्ति, धन-धाम बाँट रही हैं।

2. मातृभूमि का स्वरुप कैसे सुशोभित है ?
कवि भारत माता के स्वरुप के बारे में कहते हैं कि, भारत माता के एक हाथ में न्याय पताका है और दूसरे हाथ में ज्ञान का दीप है। भारत माँ जग का रुप बदल सकती है, कोटि-कोटि भारतवासी भारत माँ के साथ हैं। भारत के सभी नगर और ग्राम में जय हिंद का नाद गूँजता है।

3. 'प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन' आशय समझाइए।
'प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन' इस पंक्ति का आशय है कि, आज मानव ने प्रकृति के हर तत्व पर विजय प्राप्त कर ली है। प्रकृति पर मानव सवार है एवं प्रखुति को अपने नियंत्रण में रखा है।

4. दिनकर जी के अनुसार मानव-मानव का सही परिचय क्या है?
दिनकर जी के अनुसार मानव-मानवके बीच स्नेह का बंधन हो, एक मानव दूसरे मानव से प्रेम का रिश्ता जोडकर आपसी दूरी को मिटाए। सभी के साथ प्यार से बर्ताव करे वही सच्चे अर्थ में मानव कहलायेगा। यही मानव का सही परिचय है।

5. बाँध और जलाशयों से क्या उपयोग हैं?
कर्नाटक के प्रमुख नदियों पर बाँध बनाए गए है। इनसे हजारों एकड जमीन सींची जाती हैं। इन नदियों के जलाशयों की सहायता से ऊर्जा उत्पादन केंद्र स्थापित किए गए हैं जिनसे राज्य को ऊर्जा प्राप्त होती है।

6. इंटरनेट से कौन सी हानियाँ हो सकती हैं ?
उत्तर :- इंटरनेट की कुछ हानियाँ भी हैं –
१.इंटरनेट की वजह से पैरसी, बैंकिंग फ्रॉड, हैकिंग (सूचना/खबरों की चोरी) आदि बढ रही हैं ।
२. मुक्त वेब साइट, चैटिंग आदि से युवा पीढी ही नहीं बच्चे भी इंटरनेट की कबंध बाँहों के पाश में फँसे हुए हैं ।
३. इससे वक्त का दुरुपयोग,अनुपयुक्त और अनावश्यक जानकारी हासिल कर रहे हैं ।

7. व्यापार और बैंकिंग में क्या मदद मिलती है ?
उत्तर :- १.इंटरनेट द्वारा घर बैठे-बैठे खरीददारी कर सकते हैं ।
२. कोई भी बिल भर सकते हैं ।
३. इंटरनेट बैंकिंग द्वारा दुनिया की किसी भी जगह पर चाहे जितना भी रकम भेजा जा सकता है ।

7.अगवतीचरण वर्मा जी ने मातृभूमि कविता में भारत माँ को कैसे चित्रित किया है ?
मातृभूमि अमरों की जननी है । इसके उर में गाँधी, बुद्ध और राम शायित हैं। भारत माँ के खेत हरे-भरे और सुहाने हैं । यहाँ फल-फूलों से युत वन-उपवन हैं । भारत माँ के अंदर खनिजों का व्यापक धन भरा हुआहै । वह सबको सुख-सांपत्ति और धन-धाम मुक्त हस्त से बाँट रही है। इसके एक हाथ में न्याय-पताका और दूसरे हाथ में ज्ञान-दीप है । इस तरह वर्माजी ने भारत माँ(मातृभूमि) को चित्रित किया है ।

8. बसांत ने राजकिशोर को छलनी खरीदने के लिए किस तरह प्रेरित किया ?
जब राजकिशोर छलनी खरीदने के बजाय ब्संत को दो पैसे देते हैं, तब बसंत कहता है कि यह तो भीख है । मैं भीख नहीं लूँगा । बसंत की इस बात ने राजकिशोर को छलनी खरीदने के लिए प्रेरित किया ।

10. तुलसीदास जी के अनुसार मनुष्य के जीवन में प्रकाश कब फैलता है ?
देहरी पर दिया रखने से घर के भीतर तथा आँगन में प्रकाश फैलता है उसी तरह राम-नाम जपने से मानव की आंतरिक और बाह्य शुद्धि होती है । इस तरह शुद्धि होने से मनुष्य के जीवन में चारों ओर प्रकाश फैलता है ।

11. दक्षिण शिखर पर चढ़ते समय बिछेंद्री के अनुभवों के बारे में लिखिए ।
दक्षिण शिखर के ऊपर हवा की गति बढ़ गाई थी । हवा के झोंके बर्फ के कणों को चारों तरफ उड़ा रहे थे । उन्हें कुछ भी दिखायी दे नहीं रहा था । थोड़ी दूर तक कोई ऊँची चढ़ाई नहीं थी। ढलान एकदम सीधी नीची चली गाई थी । उनकी साँस एकदम रूक गाई थी । लेकिन सफलता उनके बहुत ही नज़दीक थी । बिछेंद्री 23 मई 1984 के दिन दोपहर 1:07 मिनट पर एवरेस्ट की चोटी पर खड़ी थी ।

12. बिछेंद्री पाल ने पहाड़ पर चढ़ने की तैयारी किस प्रकार की ?
कर्नल खुल्लर ने साउथ कोल तक की चढ़ाई के लिए तीन शिखर दलों के दो समूह बना दिए थे । बिछेंद्री सुबह चार बजे उठ गाई। बर्फ पिघलाई और चाय बनाई । कुछ बिस्कुट और आधी चॉकलेट का हल्का नाश्ता करके साढ़े पाँच बजे अपने तांबू से निकल पड़ी । अंग दोरजी भी उनके साथ चलता है ।

* चार अंकोंवाले प्रश्

कन्नड भाषा तथा संस्कृति को कर्नाटक के साहित्यकारों की क्या देन है?
1.कर्नाटक के साहित्यकारों ने सारे संसार में कर्नाटक की कीर्ति फैलाई है।
2.वचनकार बसवण्ण क्रांतिकारी समाज सुधारक थे।
3.अक्कमहादेवी, अल्लमप्रभु, सर्वज्ञ जैसे अनेक संतों ने अपने अनमोल वचनों द्वारा प्रेम, दया और धर्म की सीख दी है।
4.पुरंदरदास, कनकदास आदि भक्त कवियों ने भक्ति, नीति, सदाचार के गीत गाये है।

5.पम्प, रन्न, पोन्न, कुमारव्यास, हरिहर, राघवांक आदि ने महान काव्यो की रचना कर कन्नड साहित्य तथा संस्कृति को समृद्ध बनाया है।

2)कर्नाटक के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन कीजिए. ?

1.प्रकृति माता ने कर्नाटक राज्य को अपने हाथों से सँवार कर सुन्दर और समृद्ध बनाया है।

2.कर्नाटक की प्राकृतिक सुषमा नयन मनोहर है।

3.पश्चिम में विशाल अरबी समुद्र लहराता है।

4.इसी प्रांत में दक्षिण में उत्तर के छोरतक फैली लम्बी पर्वत मालाओं को पश्चिमी घाट कहते है।

5.इन्ही घाटों का कुछ भाग सह्याद्री कहलाता है।

6.दक्षिण में नीलगिरी की पर्वतमालाएँ शोभायमान है।

3)कर्नाटक की शिल्पकला और वास्तुकला का परिचय दीजिए |

1.कर्नाटक राज्य की शिल्पकला अनोखी है।

2.बादामी, ऐहोले, पट्टदकल्लु में जो मंदिर है उनकी शिल्पकला और वास्तुकला अद्भुत है।

3.बेलूर, हलेबीडू, सोमनाथपुर के मंदिरों में जो पत्थर की जो मुर्तियाँ हैं, वे सजीव लगती है।

4.श्रवणबेलगोला में 57 फूट ऊँची गोमटेश्वर की एकशिला प्रतिमा है जो दुनिया को त्याग और शांति का संदेश देर ही है।

4)बसंत स्वाभिमानी और ईमानदार लड़का था। कैसे?

* पं. राजकिशोर से बसंत भीख नहीं लेता, ईमानदारी से चीजें बेचने की ही बात करता है।

* छलनी, बटन, दियासलाई सब चीजें बिना नफे के ही बेचने लगता है।

* राजकिशोर बसंत से छलनी लेता है। बसंत मुफ्त के पैसे को भीख समझता था। इसलिए वह राजकिशोर से मुफ्त में पैसे लेने से इनकार करता है। छलनी खरीदने के बाद राजकिशोर ने एक रूपये का नोट बसंत को दिया। बसंत उस नोट को बुनाने के लिए बाज़ार की ओर गया। लेकिन वापस लौटते समय मोटर दुर्घटना से उसके दोनों पैर कुचले गये। इसलिए वह राजकिशोर के पासन लौट सका। जब उसे होश आया तो उसने तुरंत भाई प्रताप को पैसे लौटाने के लिए राजकिशोर के यहाँ भेजा। इस घटना से हमें लगता है कि बसंत ईमानदार और स्वाभिमानी भी है।

5)पं. राजकिशोर के मानवीय व्यवहार का परिचय दीजिए।

१. बसंत का छोटा भाई प्रताप राजकिशोर के घर आता है और उन्हें पैसा लेने के लिए कहता है। प्रताप ने राजकिशोर से कहता है कि उसका भाई बसंत नोट बुनाकर वापस आते समय मोटर के नीचे आ गया और उसके दोनों पैर कुच ले गये। बसंत बेहोश पडा और होश आने पर प्रताप को पैसे देने के लिए भेजा था। यह सुनकर राजकिशोर को बहुत दुख होता है। इससे प्रताप के साथ उसी समय बसंत को देखने चला जाता है और डाक्टर को भी बुलवाता है। इसलिए उसे अस्पताल ले जाने को कहता है और एम्बुलेन्स को बुलाता है। इस प्रकार राजकिशोर की मानवीयता व्यक्त होती है।

२. बाजार में बसंत पर दया दिखाकर कोई चीज खरीदें बिना ही उसे पैसे देने लगते हैं।

३. मजदूरों की बस्ती में लेक्चर देते हैं।

1. छुट्टी पत्र

दिनांक :- 07-07-2014

प्रेषक,
रामू
१० वीं कक्षा, रो.नं.-27
सरकारी हाईस्कूल
लक्कुंडी – 591102.

सेवा में,
प्रधान अध्यापक,
सरकारी हाईस्कूल
लक्कुंडी – 591102.

विषय :- छुट्टी की अनुमति हेतु प्रार्थना पत्र

महोदय,

दिनांक 07-07-2014 और 08-07-2014 के दिन हमारे घर में बडे भैया की शादी होनेवाली है, तो इन दिनों मैं स्कूल नहीं आ पाउँगा।

अत: आपसे निवेदन है कि दो दिनों के लिए छुट्टी की अनुमति दें। पठित पाठ को मैं आते ही पूरा कर लूँगा।

सधन्यवाद,

आपका आज्ञाकारी छात्र,
रामू,

2. पिताजी को पत्र

दिनांक :- 10-08-2014

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम।

आपके आशीर्वाद से मैं यहाँ सकुशल हूँ। आपका पत्र मिला, जो पढकर अत्यंत खुशी हुई। मेरी पढाई ठीक चल रही है। आपकी आज्ञानुसार मन लगाकर दिन-रात पढाई कर रहा हूँ। खेल-कूद या गपशप में समय बर्बाद नहीं करता। आप लोग खून-पसीना एक करके हमारी शिक्षा के लिए सामग्री जोडते हैं। आपके परिश्रम के बारेमें मैं जानता हूँ। आप मेरे पढाई के बारेमें चिंता न कीजिए।

माताजी को मेरा प्रणाम, छोटी बहन को ढेर सारा प्यार।

आपका प्रिय पुत्र,
राजु,

सेवा में,
श्री रामचंद्र हेगडे
मु/पो- लक्कुंडी- 591102
तहसील- बैलहोंगल
जिला-बेलगांवी

*** दो अंकोवाले प्रश्न :-**

१. सूर्य के पुत्र कौन थे ? शनै:चर का अर्थ क्या है ?

उत्तर :- शनि महाराज सूर्य के पुत्र थे । शनै:चर का अर्थ होता है – धीमी गति से चलनेवाला ।

2. शनि का निर्माण किस प्रकार हुआ है ?

उत्तर :- बृहस्पति की तरह शनि का वायुमंदल भी हाइड्रोजन, हीलियम, मीथेन तथा एमोनिया गैसों से शनि का निर्माण हुआ है ।

३.सत्य क्या होता है ? उसका रुप कैसे होता है ?

उत्तर :- जो कुछ भी अपनी आँखों से देखा, बिना नमक-मिर्च लगाए बोल दिया- यही तो सत्य है । सत्य दृष्टि का प्रतिबिंब है, ज्ञान की प्रतिलिपि है, आत्मा की वाणी है । यही सत्य का रुप होता है ।

४. शास्त्र में सत्य बोलने का तरीका कैसे समझाया गया है ?

उत्तर :- शस्त्र में सत्य बोलने का तरीका ऐसे समझाया गया है कि- 'सत्यं ब्रूतात, प्रियं ब्रूयात, न ब्रूयात सत्यमप्रियम' अर्थात, सच बोलो जो दूसरों को प्रिय लगे, अप्रिय सत्य मत बोलो ।

5. हर स्थिति में सत्य बोलने का अभ्यास क्यों डालना चाहिए ?

उत्तर :- हर स्थिति में सत्य बोलने का अभ्यास डालना चाहिए क्योंकि सत्य वह चिनगारी है असत्य पल भर में भस्म हो जाता है ।

*** निबंध** **1. इंटरनेट**

* **प्रस्तावना** :- आधुनिक समय में, पूरी दुनिया में इंटरनेट एक बहुत ही शक्तिशाली और दिलचस्प माध्यम बनता जा रहा है। ये एक नेटवर्कों का नेटवर्क है और कई सारी सेवाओं तथा संसाधनों का समूह है जो हमें कई प्रकार से लाभ पहुँचाता है। इसके इस्तेमाल से हमलोग कहीं से भी वर्ल्ड वाइड वेब तक पहुँच सकते है। ये हमें बड़ी तादाद में सुविधा मुहैया कराता है जैसे-ईमेल, सर्फिंग सर्च इंजन, सोशल मीडिया के द्वारा बड़ी हस्तियों से जुड़ना, वेब पोर्टल तक पहुँच, शिक्षाप्रद वेबसाइटों को खोलना, रोजमर्रा की सूचनाओं से अवगत रहना, विडियो बातचीत आदि।

* **इंटरनेट की महता** :- आधुनिक समय में लगभग हर कोई इंटरनेट का इस्तेमाल विभिन्न उद्देश्यों के लिये कर रहा है। जबकि हमें अपने जीवन पर इससे पड़ने वाले फायदे-नुकसान के बारे में भी जानना चाहिये। विद्यार्थीयों के लिये इसकी उपलब्धता जितनी लाभप्रद है उतनी ही नुकसानदायक भी क्योंकि बच्चे अपने माता-पिता के चोरी से इसके माध्यम से गलत वेबसाइटों का भी इस्तेमाल करते हैं जोकि उनके भविष्य को नुकसान पहुँचा सकता है। ज्यादातर माता-पिता इस खतरे को समझते है लेकिन कुछ इसे नज़रअंदाज कर देते है और खुलकर इंटरनेट का इस्तेमाल करते है। इसलिये घर में बच्चों द्वारा इंटरनेट का इस्तेमाल अभिवावकों की देखरेख में होनी चाहिये।

* **उपसंहार** :- कभी-कभी इंटरनेट से सीधे-तौर पर कुछ भी डाउनलोड करने के दौरान, हमारे कम्प्यूटर में वाइरस, मालवेयर, स्पाइवेयर, और दूसरे गलत प्रोग्राम आ जाते है जो हमारे सिस्टम को नुकसान पहुँचा सकते है। ऐसा भी हो सकता है कि हमारे सिस्टम में रखे डाटा को बिना हमारी जानकारी के पासवर्ड होने के बावजूद भी इंटरनेट के द्वारा हैक कर लिया जाये। इंटरने से भी लाभ भी हैं और हानियाँ भी हैं, अब सिर्फ हम निर्भर होता है कि इसका इस्तेमाल कैसे करते हैं।